

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-V

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। हर एक भाग में से अनिवार्य प्रश्नों के अलावा कम से कम एक प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य है। सब प्रश्नों का अंक समान है। भाग एक का उत्तर जैमिनीय आधार पर एवं भाग दो पराशरी सिद्धान्त के अनुसार उत्तर देना है।

भाग-I (जैमिनी ज्योतिष)

1. जन्म तिथि: 2-11-1938, जन्म समय : 04.30 सांय, जन्म स्थान: 29°53', 71°18', राहु विंशोत्तरी भोग्य दशा : 13 वर्ष 6 महीने 21 दिन, पुरुष लग्न: मीन 17.37, सूर्य: तुला 16-21, चन्द्रमा: कुम्भ 09-58, मंगल: कन्या 12-09, बुध: वृश्चिक 00-18, बृहस्पति: मकर 29-43, शुक्र(व): वृश्चिक 11-46, शनि(व): मीन 19-43, राहु: तुला 24-49, केतु: मेष 24-49
क) घर दशा की गणना करिये।

ख) जातक के व्यवसाय पर चर्चा किजिए।

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखें :

- आत्मकारक और सूर्य।
- ग्रहबल की गणना की विधि।
- वैवाहिक जीवन में दारा पद की भूमिका।

3. सही अथवा गलत वाक्य बताईये :-

- यदि सूर्य और शुक्र के द्वारा कारकांश दृष्ट हो तो जातक सरकारी नौकरी में होता है।
- कारकांश से चतुर्थ भाव में यदि उच्च का शुक्र हो तो जातक के पास राजसिक निवास होता है।
- चन्द्र यदि कारकांश में शुक्र की राशि में हो तो जातक औषधि विक्रेता होता है।
- यदि शनि कारकांश से सप्तम भाव में स्थित हो तो जातक की पत्नी की उम्र जातक से अधिक होगी।
- यदि कारकांश तुला हो तो जातक व्यापारी होगा।
- यदि केतु और बृहस्पति कारकांश में हो तो जातक शिव-भक्त होगा।
- यदि राहु कारकांश में हो तो जातक चोर या धनुषधारी हो सकता है।
- धनु की दशा में जातक का मान भंग हो सकता है।
- यदि पूर्णिमा का चन्द्रमा और शुभ कारकांश में हो तो जातक विद्यादान के द्वारा अपनी आजीविका चलाता है।
- यदि बली शनि कारकांश में हो तो जातक अपने गाँव में प्रसिद्ध होता है।

4. प्रश्न 1 में दी गई कुण्डली के आधार पर जैमिनी सिद्धान्त के द्वारा जातक की आयु की गणना करें।

5. फलादेश में उपपद की उपयोगिता के बारे में चर्चा करिये।

भाग-II (विवाह एवं मेलापक)

6. नीचे दिए गए कुण्डली का मिलान कीजिये :

कन्या: जन्म तिथि 19-07-1986, समय 12.00 दोपहर, जन्म स्थान: कानपुर, जन्म के समय केतु दशा: 5 वर्ष 10 महीने 16 दिन, वर्तमान में सूर्य में चन्द्रमा की अंतर्दशा: 16-09-2012 से 17-3-2013.

पुरुष: जन्म तिथि : 12-12-1982 समय : 3.15 दोपहर, जन्म स्थान : दिल्ली, जन्म के समय बृहस्पति दशा: 12 वर्ष, 02 महीने, 01 दिन, वर्तमान में शनि में बृहस्पति की अंतर्दशा : 29-7-2011 से 09-02-2014,

कन्या			पुरुष		
ग्रह	राशि	भोगांश	ग्रह	राशि	भोगांश
लग्न	कन्या	28-20	लग्न	मेष	22-29
सूर्य	कर्क	02-38	सूर्य	वृश्चिक	26-25
चन्द्रमा	धनु	02-10	चन्द्रमा	तुला	23-12
मंगल(व)	धनु	21-25	मंगल	मकर	08-04
बुध (व)	कर्क	09-29	बुध	धनु	08-49
बृहस्पति(व)	कुम्भ	20-07	बृहस्पति	वृश्चिक	03-33
शुक्र	सिंह	14-54	शुक्र	धनु	05-50
शनि (व)	वृश्चिक	09-40	शनि	तुला	07-41
राहु	मेष	01-46	राहु	मिथुन	10-40
केतु	तुला	01-46	केतु	धनु	10-40

7. विवाह काल निर्णय के लिए किसी एक सिद्धान्त पर विस्तार से बताएं। प्रश्न संख्या 6 के आधार पर दानों जातकों के लिए विवाह काल निर्णय करें।
8. नीचे दी गई कुण्डली के आधार पर जातक की वैवाहिक जीवन पर प्रकाश डालें।
जन्म तिथि : 08-02-1984, समय 03.30 रात्रि, जन्म स्थान : दिल्ली, महिला, जन्म के समय की भोग्य दशा : बुधा: 0 वर्ष 11 महीने और 21 दिन
लग्न : वृश्चिक 28-00, सूर्य: मकर 24-42, चन्द्रमा : मीन 29-14,
मंगल : तुला 19-52, बुध : मकर 04-41, बृहस्पति : धनु 10-19,
शुक्र : धनु 22-29, शनि : तुला 22-31, राहु : वृष 19-41, केतु: वृश्चिक 19-41
9. किन्हीं तीन पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए :
क) नवांश की विवाह मेलापक में उपयोगिता
ख) अशुभ ग्रहों का सप्तम भाव पर प्रभाव
ग) विवाह और मंगल ग्रह की दशा
घ) बहु विवाह (एक से अधिक विवाह) के योगों का वर्णन
ड) दशा संधि एवं विवाह
10. विस्तारपूर्वक बताइये कि नीचे दी गई जातक की कुण्डली के अनुसार वैवाहिक जीवन सुखद है अथवा नहीं -
पुरुष : जन्म तिथि 26-09-1975, समय 9.12 रात्रि, जन्म स्थान : कोलकाता जन्म के समय चन्द्रमा की भोग्य दशा : 4 वर्ष 3 महीने 21 दिन,
लग्न: वृष 16-26, सूर्य: कन्या 09-24, चन्द्रमा: वृष 17-35, मंगल: वृष 29-21
बुध: तुला 00-53, बृहस्पति (व) : मीन 28:20, शुक्र: सिंह 03-16
शनि: कर्क 07-18, राहु: तुला 29-20, केतु: मेष 29-20